भारतीय लोकतंत्र और इक्कीसवीं सदी

विशिजा सी. पी. IInd BA Economics

प्रजातंत्र तात्पर्य क्या है ? भारत जिसे हम एक प्रजातंत्रिक देश कहते है । प्रजातत्र ऐसी समान प्रणाली जिसमें प्रजा का स्तर ऊँचा होता है । " जोर्ज बर्नाड शा के शब्द में - यह एक सामाजिक व्यवस्था है जिसका लक्ष्य सभी लोगों का यदासम्भव अधिक से - अधिक कल्याण करना है "। प्रजातंत्र लिंकण के शब्दों में - प्रजातंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, और जनता का शासन है ।

भारत और प्रजातंत्र - स्वाधीनता के कदम चूमने पर, भारत एक प्रजातंत्र देश के रूप में निखरा है । देश की रियासतो को मंग करके चुनाव पद्धति से जनता को अवगत कराया गया । जनता द्वारा चुना गया प्रतिनिधी सरकार चलाता है ।

विध्यार्थियों का योगदान - यदि बचपन से ही छात्रों को अवगत कराया जाये अपने अधिकारों के प्रति, अपने प्रतिनिधियों के सही चयन के प्रति जागरूक बनाया गया तो भारतीय प्रजातंत्र मूर्खों का प्रजातंत्र न कहलाता है । आज के छात्र भावी के नेता है । यदी वर्तमान से छात्रों को दूर रखना गया तो भविष्य की नींव कैसे जमेंगी । अगर छात्रों को जन - अन्दोलनों में गती लानी है, यदी हमें भविष्य में गाँधी, सुभाष, जवहर, शास्त्री जैसे नेता चाहिए तो उन्हें तत्काल से इस दिशा के प्रति विवरण होना चाहिए ।

"यहाँ सतत संधर्ष विफलता कोलाहल का यहां
राज है ।
अन्धकार में दौड लग रहीं मतवाला यह सब समाज
है ।।

लोकतंत्र और एकता - जिस प्रकार फूलों की विविधता के कारण उपवन की शोभा को चार चाँद लग जाते है । शान्ती ही एकता हैं । जिसके पास शक्ति है वहीं शक्तिशालि होता है, उसी की बात को बल है । आज विश्व को सामने सबसे बडी समस्या अशान्ती और शत्रुता है । आज पूरा विश्व शास्त्रों को होट में छिपकर अपनी मृत्यू के दावत दे रहा है । आश्चर्य की बात यह है कि इतना विकसित, समृद्व होने के पश्चात भी मनुष्य मन और और के लिए तडपता है । यहाँ विनाशकाले विपरीत बुद्धी वाली कहावत सिद्ध हो गई है ।

इक्कीस्वीं सदी का भारत - भारत को आज़ाद हुए आप पूरे पच्चास वर्ष पूरे हो गए है । और इन पच्चास वर्षों में आश्चर्यजनक विकास हुआ है । अंग्रेज़ों द्वारा दी गई दरिद्रता को त्याग हमने विकास - शील देशों में अपना स्थान अगर्णी कर लिया है । आज विभिन्न देशों में हमने आत्म-निर्भरता आर्जित या प्राप्त कर ली है जिसका अच्छा उदाहरण है पोक्रान का परमाणु विस्फोट । इस आत्मनिर्भरता से सम्मान, विश्वास में बढोतरी हुई है । लेकिन भारत ने स्पष्ट किया है कि वह शान्ती प्रिय है और तब तक कोई कदम नहीं उठाएगा जब तक उसपर कोई वार न करे । तथापि अपने पडोसी देशों के गलत इरादों को धूल चटाने में वह सक्षम है ।

लोकतंत्र में त्रुटियाँ - भारतीय प्रजातंत्र सबसे बडी

त्रुटि है - अपराधिकरण । भ्रष्टाचारी लोगों की होट सी लगी है आजकल राजनीती । आज का नारा है " जिसकी लाठी उसी की भैंस "। चुनाव जीतने केलिए गलत हथकण्डे अपनाये जाते है । चुनाव निकट आते ही मंत्रियों को खरीदा जाता है, शराब और धन का लोभ देकर मतदातओं को प्रभावित करना, हत्यारों करवाना, जातिवाद और दंगे करवाना, आम बात हो गई है । भारतीय प्रजातंत्र की दूसरी कर्मी है - संगढित एवं मज़बूत दल का अभाव । आज देश की अस्थिर सरकार, तत्काल चुनाव देश की आर्थिक स्थिती को दुकदायी बना रही है । कांग्रेज़ आज भीतर से चरमरा कर रह गई है । और भारतीय जनता पार्टी का विस्तार पूरे गोत्रफल में नहीं हो पाया है ; दिनों का विभजित होकर अन्य दलों या द्वितीय दलों में बदलना राष्ट्रीय राजनीती को कमज़ोर बनाने में लगी है ।

भारतीय प्रजातंत्र की तीसरी कमी है । - अशिक्षा गरीबी, असमानता यहाँ के लोग आशिदित होने के कारण राजनीतिक अधिकारों के प्रति उदासीन रुख है । कई लोग ऐसे है जो वोट देना या अपनी पसंद के नेता चुनना आदि की सनक तक रही है । यदी शिक्षित होते तो शायद अंगूठा छाप की जगह वे जागरूक होते । आज जो अरक्षित, गरीब है वह दूसरों के हाथों कठपुतली है ।

प्रजातंत्र और उपलब्दियाँ - भारत सोने के चिडियाँ कहा जाने वाला देश विकसित देशों की तुलना में अपनी गढना करता है । जब-जब प्रजा ने चाहा, तब-तब जनता ने शासन उलट डाले । १९४७ से १९७७ तक भारत पर कान्ग्रेस का शासन था । स्वतंत्रता अन्दोलन में भाग लेने वाले नेताओं ने कोणग्रस को सरकार में बनाए रखा । परन्तु जब इन्दिरा गाँधि ने देश के कानून को रौदनों की कोशिश की, अपने स्वार्थ के कारण देश पर अपात स्थिती लग की लोगों पर मनमाने अत्याचार किया । तब जनता ने इस

चट्टान जैसी सरकार को उलटकर रख दिया । १९७७ में लोकप्रिय जनता सरकार बनी । परन्तु दुर्भाग्य उस सरकार में भानुमति के कुनबे जैसी स्थिती थी । पुनः कोणग्रस सता में आ गयी ।

भारतीय कोणग्रस की शक्ति का दूसरा प्रमाण तब मिला जब १९८९ के आम चुनावों में जनता ने तीन चौथाई बहुमत वाली राजीव गाँधी सरकार को पुनः हरा दिया । तब से आजतक देश के एक स्थिर सरकार का गठन नहीं किया गया । आशा है, लोकतंत्र का ऊँट करवट बदल रहा है । कुछ वर्षों में केन्द्र स्थिर हो पाएगा ।

इक्कीसवीं सर्दी और लोकतंत्र - इक्कीसवीं सर्दी के उज्ज्वल लोकतंत्र का एक शुभ संकेत है - निष्पदा और प्त्रकारिता का उदय । पत्र और जन संचार माध्यम लोकतंत्र को स्वस्थ सुशक्त आधार बन सकते है । सौभाग्य से इस क्षेत्र में भी आशाजनक स्थितियाँ बनती जा रही है । आश्किा को दूर भगाने के लिए साक्षरता अभियान चलाए जा रहे है । चुनाव प्रक्रिया में अनेक परिवर्तन लाया जा रहा है । न्यायपालिकाओं - मतदाताओं का जागरूक होना । जागरूक मतदाताओं को न कोई विदेशी दबाव दबा सकता है, न स्वदेशी परिस्थितियाँ भयभीत कर सकती है । अतः इक्कीसवीं सदी में भारतीय लोकतंत्र का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है ।

एक फूल बोलता है

ऐषा षहीन
IInd BSc Chemistry

मैं एक ऐसा नाजुंक फूल हूँ
जो गुलशन को चमकाता है ।
हँस हँसकर चाहनेवालों के
आँगन में बहार लाता है ।

मैं तो सदा खिल खिलाता हूँ
सब का मन बहलाता हूँ
होठों पे मेरे मीठी मुस्कान
देख के सब होते है हैरान ।

झाडियों के बीच लगता हूँ
सुनहरे चाँद का टुकटा ।
पर ज़मीन पर गिरता हूँ
तो फिर सिर्फ एक कचरा ।

चम्पा, चमेली, गुलाब, जुही
सभी तो मेरी सहेलियां यहीं
मगर मुझे डर है इन्हें खोजूँ कहाँ
छोड जाने के बाद यह हसीन जहाँ

कई लोगों को है मुझसे चाहत
मेरी नज़दीकी से मिलती है राहत
करता हूँ मैं सबसे मुहबत्त
नहीं है किसी से नफरत

दुनियावाले खुश है मुझ से
मैं तो खुश हूँ उन सब से
नाचना गाना है वह मेरा अरमान
मैं हूँ नादान। पर नहीं परेशान ।

एन्ट्रन्स वायरस

राधिका एम.
Ist BSc Zoology

सिर झन्ना रहा है, चक्कर आ रहा है, आखों में सेसा भयंकर दर्द हो रहा है कि खोल ही नहीं सकती । आँख बंद करने पर लगाता है कि हर तरफ से, हर तरह के फरमूले व तरह तरह के नाम, कोई चीख चीखकर मेरे कानों में कह रहा हो । रोने का मन करता है पर ठीक से रो भी नहीं पाती हुँ । मुझे यह क्या हो गया है कुछ पता नहीं । मेरी इन तकलीफों को दूर करने की कोई दवाई हो तो कृपया दे दीजिए डाक्टर अंकल । डॉ. बधेल के लिए यह कोई नया मामला नहीं था । इस तरह के मामले हर साल उनके पास आते थे खासकर की तब जब एन्ट्रन्स का ज्वर सब तरह एक महामारी की तरह फैला हुआ होता था । श्यामा का मामला भी उन्हीं में से एक है, यह समझने में डाक्टर साहब को देर नहीं लगी । उन्होने निर्विकार हो अपने पर्चे पर किसी नींद की गोली का नाम लिखकर दे दिया पर फीस लेना वे नहीं भूले।

श्यामा, कक्षा बारहवीं की छात्रा (वह बारहवीं कक्षा की परीक्षा लिख चुकी है, पर जब तक नतीजा नहीं आता वह बारहवीं की छात्रा ही कहलाएगी), पर अब, यानि गत एक महीने से, रुक एन्ट्रन्स कोचिंग सेन्टर की छात्रा है । परसों वह अपने जीवन - लक्ष्य को सफल बनाने की दिशा में अपना पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रही है: अर्थात वह एन्ट्रेन्स की परीक्षा लिखने जा रही है । गत रुक महीने से वह लगातार बेचैन रहने लगी थी, उसे नींद ही नहीं आती थी; एन्ट्रन्स की परीक्षा ने उसकी नींद से कब का अलविदा कह दिया था । आजकल उसे साँस लेने तक की फुर्सत नहीं, हर वक्त पढाई ही पढाई.....। घर से कोचिंग सेन्टर तक और कोचिंग सेन्टर से घर तक, जो आधा-आधा घंटा, यात्रा करते हुए निकलता था वहीं उसका एकमात्र मनोरंजन था ।

डॉ बंधेल के अस्पताल से निकल श्यामा अब सडक पर पहूँच चुकी थी । सडक के किनारे चलते चलते उसने अपना सिर उठाकर कुछ बैनरों की तरफ देखा । वे सब कोचिंग सेन्टरों के इश्तिहार थे ; सब में एक ही बात कही गयी थी; फर्क सिर्फ इतना था कि कोचिंग सेन्टरों के नाम व पते अलग अलग थे । श्यामा के सिर का दर्द और

तेज़ हो गया, दिल ज़ोर ज़ोर से धडकने लगा क्योंकि उसे परसों के बारे में सोचकर डर लगा रहा था । जब वह घर पहूँची, तब वह पता चला कि वह पसीने से तर गयी थी । डॉ बधेल द्वारा लिखी गयी दवाई माँगने का वक्त अब नहीं था उसने पर्ची एक ओर फेंक दी और तेज़ी से अपने कमरे की ओर बढी । अपने कमरे में आकर उसने बत्ती जला दी और पंखा पूरे ज़ोर से चलने दिया । उसने तय किया कि थोडी देर आराम करने के बाद पढना अच्छा रहेगा । पर जब वह लेटने को हुई तब उसने देखा कि बिस्तर पर लेटने के लिए कोई जगह नहीं थी, उस पर किताबें ही किताबें थी । यह देख वह इतनी चीढ़ गई कि मन में आया कि सारी किताबें उठाकर फेंक दें । पर सेसा करने की हिम्मत वह नहीं जुटा पाई । आराम करने के इरादे को छोड वह पढाई करने बैठ गई । पर सिर दर्द के कारण वह अधिक न पढ पाई, इसके ऊपर से उसकी आँखों का दर्द भी असहनीय होता जा रहा था । उसने पढने के लिए जो किताब खोली थी वह वैसी वैसी बंद करके रख दी और बिस्तर पर पडी किताबों को एक ओर सरकाकर लेट गई । पर उसे नींद नहीं आयी और न आने वाली थी । इसके दिमाग में बस एक ही विचार था कि बस अब एक और दिन..... एक और दिन.....

एन्ट्रेन्स के बाद का दिन । मम्मी ने श्यामा को बुलाया, पर कोई जवाब न मिलने पर उन्होंने दरवाज़ा खोलकर अंदर देखा । वहाँ का दृश्य देखकर उन्हे हसी आ गयी; श्यामा साफ सुधरे ढ़ग से बिछे बिस्तर पर लंबी तानकर पडी हुई थी और किताबें नीचे फर्श पर पडी थी ।

मम्मी के मन में आया कि श्यामा को जगा दे । पर अपनी बेटी को इतने दिनों के बाद गहरी नींद में सोती हुई देख उन्होंने वह इरादा छोड दिया । उसी समय एक और उनके दिल में तस्सल्ली हो रही थी कि दूसरी ओर यह डर सता रहा था कि अपनी बेटी की यह आज़ादी रहेगी कब तक ?.

माँ

मुमताज़ अब्दुल्ला
Ist BSc Zoology

न सोना, न चाँदी,
न हीरा, न मोती,
न है कोई ऐसी
चीज़ इस संसार में, जो
ममता से ज़्यादा कीमती हो ।
है वह अनोखी फिर भी:
मिलती है सारी दुनिया में ।।

हुँ मैं लाड़ली अपनी माँ की,
पर संबध हमारा है दोस्तों जैसा ।
बन्धन तो है उतना अटूटा ।।
बीत गये है सिर्फ चंद महीने
होकर अलग मैं अपनी माँ से,
पर लगती है जैसे -
गुज़र गए हो कई साल ।

सुबह हो या शाम, हर पल आती है याद उनकी :
मुस्कान है उनकी चमेली जैसी,
बोली है उनकी कोयल जैसी
रूप उनका है खूबसूरत,
वह है स्नेह की मूरत ।।

हर पल हर क्षण बहता है,
प्यार उनकी निगाहों से ।
पढ लेती है मेरे मन की बातें,
वह बड़ी आसानी से ।।

है धरती माँ
ऐसी ही एक माँ हो तुम भी,
जो देती है अपना सब कुछ
अपनी स्वार्थी संतान केलिए ।
लेकिन, तुम्हारी संतानों ने
तुम्हें -
कहाँ तक पहचाना है ?
यह एक ऐसा सवाल है,
जिसका जवाब पाना है...
सितारों को छूने के समान ।।

शहीद

(कारगिल के शहीदों की स्मृती में)

शरत कुमार

Ist BSc Zoology

जब मई में दुशमनों की फौज ने टाइगर हिल पर कब्जा कर लिया तो उसे उनके सैनिकों से छुड़ाना अत्यंत आवश्यक हो गया । टाइगर हिल से श्रीनगर -लेह राजमार्ग पर फायरिंग करके कारगिल का देश के दूसरे भागों से संपर्क काटा जा सकता था । श्रीनगर - लेह राजमार्ग के जरिए ही कारगिल को रसद की सप्लाई होती थी । इसलिए अगर भारतीय सेना को दुशमनों के सैनिकों को परास्त करना था तो सबसे पहले टाइगर हिल को छुड़ाना ज़रूरी था ।

टाइगर हिल को दुशमनों से छुड़ाने की ज़िम्मेदारी कैप्टन नजीब पर आयी । जब नजीब के कमांडिंग अफसर ने उन्हें इस बात की जानकारी दी तो वे फूले न समाये । उन्होंने अपने अफसर से कहा जंग फौजी की ज़िन्दगी में एक बार आती है या तो वे टाइगर हिल पर तिरंगा फहरा कर आयेंगे या तो वे इस मिशन में अपनी जान कुर्बानी कर देंगे ।

टाइगर हिल चारों ओर से बर्फ से घिरी चोटी है यहाँ खून ज़मा देने वाली सर्दी तथा दुशमनों के ऊँचाई पर होने के कारण चोटी तक पहूँचना बडा कठिन कार्य जान पड रहा था । कैप्टन नजीब ने अपने साथियों के साथ विचार विमर्श कर २० मई को अपनी यात्रा शुरू की । सीधी पहाडी होने के कारण रस्सियों का इस्तेमाल करके ऊपर चढना पड़ रहा था । इसके साथ ही ऊपर से फायरिंग के कारण यात्रा और कठिन हो गयी थी । २२ माई से कैप्टन नजीब ने सिर्फ रात में यात्रा शुरू की जिससे कि वे दुशमनों की नज़रों में न आ सके । इस दो दिन की यात्रा में उनके कई साथी मारे गाता तथा कुछ घायल हो गए । उन्होंने इलाज न होने के कारण उन्होंने अपने साथियों को दम तोड़ते देखा लेकिन फिर भी नजीब ने हिम्मत्त का दामन नहीं छोड़ा ।

अपनी फौज की यह हालत देखकर नजीब के एक साथी ने उनसे कहा वह चोटी के एक ओर को भागेगा ताकि दुश्मन फायसिंग का रुख उसकी तरह को मोड दे और नजीब और साथी पहाडी की दूसरी तरफ सुरक्षित स्थान पर पहूँच सके । कैप्टन नजीब ने उसे ऐसा करने की अनुमती नहीं दी लेकिन वह साथी अनुमति की परवाह किए बिना चोटी की एक ओर भागा गया दुश्मनों ने तेज़ फाइरिंग शुरू कर दी । नजीब का साथी वहाँ मारा गया । नजीब यह देखकर स्तब्ध रह गए, उन्होंने सलामी देकर अपने साथी के प्रति श्रद्धांजली प्रकट की उन्हें इस बात का भी बडा दुख था की वह अपने साथी के पार्थिव शरीर को फायरिंग के नीच से निकालकर न ला सके ।

इस तरह ८ दिन कष्टो को सहते हुए कैप्टन नजीब तथा गिने-चुने साथी टाइगर हिल के निकट पहूँचे । वहां पहूँचकर नजीब ने अपने सैनिकों को दो टुकडियों में बाँट और टाइगर हिल पर धावा बोल दिया । घमासान युद्ध हुआ । दोनों तरह के कई सैनिक काम आये । ६ घण्टे भी युद्ध चलता रहा इसी बीच कैप्टन नजीब के पैरों में तीन

गोलियाँ लग गई । खून का फव्वारा उनके पैरों से निकल पड़ा लेकिन उन्होंने इसकी परवाह नहीं की और फयरिंग जारी रखी । कैप्टन नजीब के साथियों ने उनसे किसी सुरक्षित स्थान पर जाने का आग्रह किया लेकिन नजीब ने इनकार कर दिया । जब नजीब ने देखा कि दुश्मनों का पलड़ा भारी हो रहा है तो वे धीरे धीरे उठे और लगँडाते हुए तथा वम गोले फेंकते हुए दुश्मनों के बोरडर की तहफ चल दिए । उन्होंने हयगोले फेंककर अकेली ही १५ दुशमन सैनिकों को मार गिराया । ये अप्रत्याशित हमला झेलने के लिए दिशमन सैनिक तैयार नहीं थे और वे बंकर छोडकर भागने लगे ।

बंकर छोडकर भागते हुए एक सैनिक ने नजीब पर फायरिंग शुरू कर दी एक के बाद एक सोलह गोलियाँ उनके सीने को छेटती हुई निकल गई । कैप्टन नजीब वहीं गिर पडे । मरने से पहले उनके मुंह से आखिरी शब्दांश सुनाई दिए "भारत माता.....की जय ।" इसी के साथ देश का वह महान वहाँ शहीद हो गया। टाइगर हिल तो फतह हो गया पर यह कामयाबी देखने केलिए कैप्टन नजीब की आखें नहीं थी । टाइगर हिल पर तिरंगा फहराया गया और सलामी दी गयी साथ ही कैप्टन नजीब का शरीर तिरंगे में लपेटा गया ।

इस तरह देश के इस वीर संतान ने अपना वादा पूरा किया यधपी इसमें उन्हें प्राणों की आहुती देनी पडी । जब कैप्टन की लाश अंतिम सस्कार के लिए उनके गाँव पहूँची तो लोग बडी तादाद में उसके अंतिम दर्शन करने जमा हो गए । अपने बेटे के पार्थिव शरीर को देखकर पिता ने भाव विव्हल होकर कहा - मुझे गर्व है मेरे बेटे पर जिसने मातृभूमी की खातिर प्राण त्याग कर दिए अगर मेरे और बेटे होते तो मैं उन्हें भी हँसते मातृभूमी को समर्पित करता ।उसी वक्त कहीं से हिन्दी के मशहूर कवि पं प्रदीप की पंक्तियाँ गूँज रही थी

ये मेरे वतन के लोगों

ज़रा आंखों से भर लो पानी

जो शहीद हुए है उनकी ज़रा याद करो कुर्बानी

(कुछ याद उन्हें भी कर लो जो लौट के घर न आऐ) जय हिन्द